

॥ आ० ॥ ३९ ॥

॥ श्रीरामविजयग्रंथयत्त्रिशतिध्यायप्रारंभः ॥



2

श्रीराम ॥
१९११

॥ श्रीमहागणाधिपते नमः ॥ जोरणरंगधिररघुविरा ॥ रविकुळमंडणराजिवनेत्र ॥ रजनिचरोत्करजनिय
गात्रा ॥ यजेच्चरमापति ॥ १ ॥ आत्मारामबयोध्यानाथ ॥ आनंदसपअक्षयज्वत्का ॥ अपरेपरबनिका
अमित ॥ आद्यअनंतअनादिजो ॥ २ ॥ कर्ममोचकैवल्लदनि ॥ करुणास्यमुद्रकार्मुकपाणि ॥ कबंधे
दृक्कृत्स्निमेषजाकुनि ॥ करिकल्याणमकांबे ॥ ३ ॥ परमानंदापरमपुरुषा ॥ पद्मजातजनकपयनिधि
वासा ॥ पंकजजेत्रापतसरहंसा ॥ पशुपतिहृदयजिह्वा ॥ ४ ॥ मनमोहजमंगकुधामा ॥ मुनिजन
हृदयामेघःशामा ॥ मायालितामवविश्रामा ॥ मानववेशधारका ॥ ५ ॥ दिनदयाळदृशरथनंदना ॥
दशमुरवांतकुदुष्टदृक्का ॥ दानवरिपुद्गरिदृष्टना ॥ दशजवतरवशारका ॥ ६ ॥ तिसावज्जाध्यर्षि
निरोपण ॥ सुलोचनादेविप्रवेशलिअना ॥ यावारावेशतिनयन ॥ चिंताक्रांतशोककरि ॥ ७ ॥ बंधुपु
त्रपडिठरणि ॥ आलापाठिरारवानहिसेकोप्ति ॥ तैविद्युतजिह्वानेक्षणि ॥ प्रधानबोलताजाहला
॥ ८ ॥ ह्मणेअहिरावणामहिरावणा ॥ पालकिराहतिदोधेजणा ॥ लकापठपविद्येकसन ॥ रामलसुमणननित ॥ ९ ॥

॥ विलय ॥
॥ १९११ ॥

2A

कविकेपुटेतात्काकिं ॥ समर्पितदोघं चिबकि ॥ नैसंजैकतां दशमैकि ॥ परमसंलोषपावला ॥ ११ ॥ शक्ये
 यत्र पाठवितं लिहोना ॥ तात्काकबालेदोघे जण ॥ किंतेकामक्रोधचयेउनि ॥ अहंकारमेरेले ॥ ११ ॥ त्यादोघं
 शिबालिं गुन ॥ मयजापतिकरितहन ॥ ईंद्रजिताचं वर्तमान ॥ दोघं जणाशिसंगितले ॥ १२ ॥ यावरिते
 दोघेबेल्ता ॥ आतांगतशोकबसाबहुता ॥ आतांसंमित्रबाणिरधुनाथा ॥ रजनिमजिनेउतया ॥ १३ ॥
 मगवरकड्केनचासंकर ॥ करवयानुखाशिशुभयशिरा ॥ नैसंजैकतां दशकद्वयनेत्र ॥ परमसंलोष
 पावला ॥ १४ ॥ तंविभिषणाचेदोघप्रधाना ॥ गुप्तसंशयगोष्टिजैकोन ॥ तंहिपवनवेगंजाउन ॥ रावणा
 बुजशिकथियेले ॥ १५ ॥ तणेबकनिहजांबुक्ता ॥ मयमासतिशिकरितिश्रुत ॥ तणेपुच्छदुर्गअनुल
 ॥ समोवतेरचियेले ॥ १६ ॥ वेढ्यावरिवेढ्यालेगिने ॥ वज्रदुर्गउंचावेलंगगिने ॥ वरिठांईठांईद्रम
 पाणि ॥ जागतेवैसवेसर्वदां ॥ १७ ॥ निशाग्रहणपरमकाकिं ॥ किंकाकपुरषचिंकाबकिं ॥ किंजगा
 वरिरेबेकधालति ॥ अज्ञानाचिबविद्येना ॥ १८ ॥ निशिमजिरीसिबहुत ॥ पक्षिनानाशब्दकरित ॥

श्रीराम ॥
१२॥

3

रिसवडधुकंतैथे ॥ लोकबंतिशारैवशि ॥ १९ ॥ भुलंजाणियक्षिणि ॥ गंधकधालिनिमाहावनि ॥ साहाजा
 कल्पदेरवोनि ॥ गुप्तहोतिजप्सरा ॥ २० ॥ स्मशानिमाजलेप्रेतगणा ॥ मयानकसेपेदाउन ॥ छळंति
 अपवित्रालागुन ॥ पवित्रदेरवोनिपकतित ॥ २१ ॥ पिंगटिधोरकिलकिलिति ॥ मलुकुक्रादिवामितंबामिति ॥
 चक्रवाकचस्वरउठति ॥ टिटिक्वोमातिववनि ॥ २२ ॥ कुमुदिमिलिंदसवेग ॥ मस्तकिंमणिनिचा
 लेउरंगा ॥ विद्येधानेप्रचटलिसंगा ॥ येउलपतिसजाग्या ॥ २३ ॥ असोअशिनिशाहाटलिघोर ॥ ॥ विजय ॥
 लोपातलेहाधेअसुर ॥ दुर्गावरिगर्जातिवांनरा ॥ मर्गअधुमात्रदिसना ॥ २४ ॥ अस्त्रकरितिपरम ॥ १२५ ॥
 बक ॥ फाडुंपाहातिदुर्गसवळ ॥ मुळवमोडलेतावाळ ॥ काटबळळवजाह्नुनि ॥ २५ ॥ मगउध्वंपंधे
 उडेन ॥ दुर्गमर्यादाउलंधुन ॥ तैथेनिजेलेरानलसुमण ॥ उसरलेतैथेअकस्मति ॥ २६ ॥ लोकांन
 कहस्विसर्गवरि ॥ निद्रिस्सदोधेलिकावतारि ॥ क्रिमापतिउमापतिशेडारि ॥ अबनिवरिनिजेले ॥ २७ ॥
 आयिंचनिद्रासुरवचन ॥ वरिरक्षिसिंधानलंमोहन ॥ शियेसहितउचलुन ॥ मस्तकिंधेउनचानिले ॥ २८ ॥

3A

तथेचिकोरिलेविवर॥ लंबायमानयोजनेसत्यसहस्र॥ ससद्यटिकेतयामिनिचर॥ घेउनिगेलदे
 द्यंशि॥ २९॥ पुढेतेरासहस्रऽयोजनेपुर्ण॥ दधिमुखसमुद्रकोलांडुन॥ तथेमहिकावतिनगरपुर्ण॥
 लंकेहुनिविशपै॥ ३०॥ कामक्रोधदोषजपा॥ जालयाशिचालितिनावरण॥ तैसेनिशाचिरराम
 लक्ष्मण॥ सहनिद्रदरक्षिते॥ ३१॥ नगरमध्येमागिंदेउक॥ येकिसयोजनेउंचविशाक॥ तंभद्र
 काकिंचंमुखस्वक॥ माहाविशाकभयजक॥ असोदधिसमुद्रचेनीरिजाण॥ विसक्रेटिपि
 शिताशिन॥ मकरध्वजबकाळ्यपुर्ण॥ द्रुतरसपालविल॥ ३३॥ महिकावतिसरामलक्ष्मण॥ नि
 द्रिसवखिलसेमोहन॥ त्यावरिनागपारिबायान॥ बैसलिरक्षणाबहिमहि॥ ३४॥ असोईकेउसु
 वेकेशिजाण॥ कायजालेवर्तमान॥ निशापैसंतचंडकिर्ण॥ उदयापावजकस्माता॥ ३५॥ ध्यावया
 रघुविरदर्शन॥ समस्तपाललेवांनरगण॥ तोशय्येसहितसंपुर्ण॥ हेनिहिनियनेनिहिसति॥ ३६॥
 हेखिलंभयानकविवर॥ घाविरजालेवांनर॥ सुत्रिवाहिकपिसमग्र॥ गजवजिलेदेखेनिय॥ ३७॥

श्रीराम ॥
॥३॥

(4)

मगमाहतिवाळर ॥ द्वादशगोवंपउलथोर ॥ असुराचंउमटेनंभयंकर ॥ रघुविरभक्तपाहति ॥ ३५ ॥
याचराच्यराचंजिवन ॥ जेकमकोज्वचंदेवतर्चिना ॥ वेरिचोरिलंअणोन ॥ हृदयपिटिलेसुग्रिवं
॥ ३६ ॥ सकळवांनरअक्रिंहति ॥ धरणीयेजगेंवालिति ॥ येकनचेंवेउनिहाकाफोडिति ॥ धाकेर
घुपतिहणोनियां ॥ ३७ ॥ जगद्वंद्यारजिवनत्रा ॥ केउबगलशिआह्रावांनरं ॥ तुंपरासरअना
दिसोयंरा ॥ कोठेगेलशिउपेह्युनि ॥ ३८ ॥ तेविमिषणआनाधांवन ॥ ह्यणेस्थिरस्थिरअवधज ॥ विजय ॥
पा ॥ हेगोष्टिवाहेरजासांपुण ॥ यईलरविणधुध्या ॥ ३९ ॥ रामेविणसेनासमय ॥ जैसंप्राणावि ॥ ४० ॥
णशरिरा ॥ त्रिफुटेनआवावासमाचारा ॥ येइलरवणयुध्याशि ॥ ४१ ॥ पिंडंअडलत्वासहित ॥
शोधिलजैसासद्गुननाथा ॥ मगवस्तुनिवेडशाअना ॥ शिलाकंततैसाशोध ॥ ४२ ॥ किंधुकितहरप
तांमुलं ॥ आराकरंनिवडिसावचिते ॥ किंवेदांतवाअर्थपंडित ॥ उकलेनियांकळित ॥ ४३ ॥ किंस
मुद्रिपडिलेवेद ॥ तेमधुरपेजोधितमुकुंद ॥ तैसाशिताहसवमिलिंह ॥ शोधुनियाकाळावा ॥ ४४ ॥

तुहिरधुपतिचेप्रापामित्र॥ जगिरथप्रेलकरनधोर॥ तुमचाप्रतापरोहिणिवर॥ निष्कंकंकुउदय
 वाद्य॥ ४७॥ तुमच्याग्याशिवाहिंपार॥ जेंसुरवरपबाहेवायुकुमर॥ तोह्यणामात्रंरधुविर॥ वंई
 पाडिलक्षणाधै॥ ४८॥ रधुनाथप्राप्तिसकारण॥ नुंसदुरजात्माशिपुर्ण॥ कामक्रोधअहिमीहिनिव
 दुन॥ आत्मारामहस्वविं॥ ४९॥ पुर्विदित्ताशुद्धिकल्पिहिं॥ आंतारामाशिपाडिजवांई॥ जैसेंजै
 कतांतेसमई॥ राधवप्रियबोलत॥ ५०॥ अथेनलागतांयदक्षणा॥ विरंविगोकशोधिन॥ वंधुस
 हिलशितारमण॥ सुवेकेशिआपितोआत॥ ५१॥ ह्येसुयिंविभिषणा॥ तुह्मिप्रतापेंरक्षवि
 कपिसेना॥ विजईश्रीअयोध्याराणा॥ असुरनिबदुनिआपितो॥ ५२॥ नळनिळळंगदजांबु
 वंत॥ घेउनिप्रवेशलाविवरांत॥ तेंसातसहस्रयोजनेतेधे॥ अंधःकारघोरपै॥ ५३॥ चौधकासा
 विसहोठनि॥ मार्गिंपडिलेमुर्छायुनी॥ मंगलेमारतिनेबांधेनि॥ आणिलेउचलेनिबाहर॥ ५४॥
 लागतांचिशितकपवन॥ सावधजालेचौधजणा॥ मकरध्वजवेसलारक्षणा॥ दारितयाअसुराच्या॥ ५५॥

श्रीराम ॥
॥४॥

(5)

ते विसकोटिरास्य सधे उ न ॥ मकर ध्वज वैस्य लारस्य ण ॥ मगपांच हि वे श पा ल दु न ॥ कापडि हो उ न च लि ले
॥५६॥ लो ज सूर ह्य वि ति न य ल ॥ को उ रे ज ना य णे पं थं ॥ य र ह्य ण ति ज तां ति र्था तं ॥ महि का व ति पा हा
व या ॥ ५७ ॥ अं ल रि ह्य क र नि उ ज ण ॥ धे उं क वि के च द र ष ण ॥ तु स्त्रि ब व र श वा व या का य का र ण ॥ अं के नि
र ह्य स ह्ये म ले ॥ ५८ ॥ स क्ति कें दं उ च नु न ॥ कर नि क पि रि ता उ ण ॥ इ नु मं ते प र्शि य र न ॥ म रि ले बा प ट
नि ला का क ॥ ५९ ॥ अं से न्दे र व तं वि प रि त ॥ रा ह्य स धा वि के स म स्ते ॥ त्र ता प स द्र ह नु मं त ॥ जै सा क्ति
त ह्ये म ले ॥ ६० ॥ अं से र व्या त कं ज र म रि ॥ त्र वे श त पांच के श रि ॥ तै सा पांच नि ते ब व सी रं ॥ रा ह्य ॥ वि ज य ॥
स स र्व म रि ले ॥ ६१ ॥ वि स को टि पि रि ता स न ॥ म ग पा च ज ण नि म र बां धो न ॥ पृ थ्वि व रि बा प टु न ॥ ॥४॥
स मु द्रं ल टा कि ले ॥ ६२ ॥ लो म क र ध्व ज ध व नि ॥ मि उ क मा र ति त्रि ये उ नि ॥ मु ष्टि प्र ह रे क र ति ॥ ये क
मे कां स न डि ति ॥ ६३ ॥ स म धा न कें द ण पि ल ॥ प र म ध्ये म ले ब रु त ॥ हृ द ई दे उ नि मु ष्टि धा व ॥ म क
र ध्व ज पा डि ला ॥ ६४ ॥ व ह्य स्थ किं मा र ति वै सो न ॥ ह्म णे तु ज जा तां सो ड वि ल को प ॥ य र ह्ये णे अं ज नि नं द न ॥

5A

जवळिनी हिंयकाकिं ॥ ६५ ॥ तो जगियई लघावो न ॥ तरितुज करिल शतचुर्ण ॥ तो मझापिता जाण ॥
 खुमलजेक निशकल ॥ ६६ ॥ मगलयशिहनिघतना ॥ सांगकेस्येवतमान ॥ ब्रह्मच्यारि किं वयुनं
 दन ॥ तुसुलकोटुने जालशि ॥ ६७ ॥ मिचहुनु मंतरावतार ॥ लुं हणवितेशिमासाकुमरा ॥ सांगलां
 हासतिलसमय ॥ सांगप्रकारकसतो ॥ ६८ ॥ ये सतणे लंकादहनकरना ॥ कपाकिंचाश्वेटाकिलानिर
 सुज ॥ मगरिने गिळि कापुर्ण ॥ तो मिजाके मकरज ॥ ६९ ॥ जैसा हसांन सांगोति ॥ पुत्रमस्त
 केडेविलचरणि ॥ तो मगरि जालि घावोनि ॥ जलसाशिगाहावया ॥ ७० ॥ मगहणे स्वतर्पादिसतेला
 हना ॥ जेकांकेले लंकादहन ॥ तेकाकिंचे स्वतर्पादिसतेला ॥ संशयनिरतकरावा ॥ ७१ ॥ मगभिम
 सपधरिले ॥ तेस्यणि ॥ मगरिलागलि ब्रह्मचरणि ॥ हणचित्तानघराविमनि ॥ नयोध्यानथसु
 रिबस ॥ ७२ ॥ अहिमहि कपटिदोघे जण ॥ घेउनि जाले रामलसुमण ॥ उदईके देविपुठने उव ॥
 वळिसमर्पिते दोहां प्रहरा ॥ ७३ ॥ आपणदेउकामाजिजाउन ॥ वैसावेगु सरपेकरना ॥ तेचिस्थ

॥ श्रीराम ॥
॥ ५ ॥

(6)

किरामलक्ष्मण ॥ अटलितुलुहासि ॥ ७४ ॥ बैसं बैकतं शिताशोकहरण ॥ बंधुवेमस्किं हस्तठे उना ॥
अणो असुरवधांति तुज्ञानं हन ॥ त्रपकुरिणयस्थानि ॥ ७५ ॥ यरहणो महिकावतिनगर ॥ त्रयोदश
योजनेदुर ॥ आडवासमुद्रदुर्धरा ॥ तरिचिचारयकुबैका ॥ ७६ ॥ सुहिंयां चिह्विचिंत ॥ वैसाम्
ईवदननोके आंता ॥ महिकावतिसने उनत्परित ॥ पुढातिअणिणयस्थकिं ॥ ७७ ॥ नकनिकुं
गदजां वुचत ॥ बैकवां जाले मयामिता ॥ अणतिमगरामिठिअहुत ॥ मसिकउहकांतने उनियं ॥ ७८ ॥
तरिमासति बैकवचन ॥ आहिनीचिते हंस्वता ॥ अजचं बुजिं शिधुलं चन ॥ सहसा नककोफ ॥ विजय ॥
शि ॥ ७९ ॥ मगतयेठे उनिचौघे जण ॥ हनुमंते चिते के रामचरण ॥ यत्रास्विरामलक्ष्मण ॥ अणान ॥ ५ ॥
अकस्मात् उडला ॥ ८० ॥ मनोवेगं हनुमता ॥ आलाते कामीहिकावतिता ॥ यद्विसदुर्गं रक्षकासहि
ता ॥ कोणानकळतां वोलं डिति ॥ ८१ ॥ अणुरेणुहुनि लाहना ॥ आलाड्यानकिशोकहरण ॥ ताम
द्रककिचे देवालयदरवान ॥ आंतसंचरलाते ककिं ॥ ८२ ॥ कापट्यअनुष्ठाने बहुवस ॥ ८३ ॥

6A

ज्ञानकरिखालिरक्षस॥ विप्रान्चित्रे तं मद्यमांस्य॥ पुजनालागिंठे विलंबहु ॥३॥ मटशास्त्रका
 द्विति॥ यकास्यकवाचुनिदिविति॥ पाहाहाकरितां मोक्ष प्राप्ति॥ प्रमाणग्रथिलिहिलेजसे॥४॥
 जैसें हेरवतां रघुनाथप्रक॥ ह्येयां शिकेवागेक्षिप्राप्त॥ आलां कपाकमेक्षिन्नरिता॥ पावति
 हतेमाझिया॥५॥ असोदुकिं प्रवेशमाहासद्र॥ देविचित्रनिमाउचलेनिन्नरिता॥ न्हापित
 टाकुनिद्वार॥ इदं संकिलेहनुमंते॥६॥ वज्रकपाटं देउनि॥ आपणवैसलादेविकेस्थानि॥
 सर्वांगिशंदुरचुनि॥ जालाभवानिहनुमता॥७॥ देविमानतिके उपाहृत॥ तेमयानकृत
 पहिसला॥ जसाहरणिचियायहांत॥ माहायात्रेवेशला॥८॥ यरिक्डेअसुरिंबहुत॥ कसन
 अन्नाचिपवता॥ पुजासामग्रिधउनिअस्तु॥ देउकापामियातला॥९॥ तेवज्रकपाटं दिथलि॥
 तनुरवकतिकुंदाकान्ति॥ येकह्यणतिशक्तिक्षेप्रलि॥ ह्येयां निस्त्रोत्रेकरिताति॥१०॥ जैसेलोटे
 लायकमुहुत॥ तेसद्रतपिपिआंतुनिबालता॥ ह्येयां धन्यधन्यप्रक॥ वकिरघुनाथजाणिला॥११॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ५५ ॥

ॐ

लंकेपुं बहुतां च प्राण ॥ म्याचधेतलसत्यवचन ॥ परिनुमचंकरावयाभोजन ॥ येथंसाक्षैपंपात
 लां ॥ १२ ॥ तूरिमा ~~अं~~ रपपरमतिह ॥ पाहतांजातिलनुमचेनेत्रा ॥ तरिपाडुनगवाक्षिदार ॥ पुजा
 अधिसमपा ॥ १३ ॥ जैसेहेविकेकतांअतुनि ॥ अहिमहिनेवतेलेस्यणि ॥ अणेअहिनिभुव
 नि ॥ अकशिरामिणिदोघेहि ॥ १४ ॥ मगहेउकामस्तकिंविशाक ॥ गवाक्षिदारपाडिलेताक्काक ॥ ॥ विजया ॥
 पंच्यामूलाच्यटसवक ॥ स्नानाकारणवेतिवि ॥ १५ ॥ तेमुरवपसतनिहनुमंत ॥ धरधरां ॥ ॥ ५५ ॥
 प्राशिलेपंच्यामूला ॥ पाठिभुध्दोरकवातिलेवारता ॥ मुरवप्रक्षिकिलेतेणेपै ॥ १६ ॥ द्युपदिपवाति
 तेसमई ॥ हेविसह्रणहंतुघई ॥ सवंचक्रुणालमकलवलहिं ॥ नैवेद्यज्ञउकरियउद्या ॥ १७ ॥
 मगअरानिविशाकपात्रे ॥ अन्नंवातिवियकसंरं ॥ जयजयहेविह्रणेनिगजरं ॥ असुरसर्वग
 जेलि ॥ १८ ॥ सव्यजपव्यहलकतनि ॥ स्वाहाकरितसद्रसपीणि ॥ जैसेद्रावाग्निचेतलावनि ॥
 तेनानाकाष्टेअक्षित ॥ १९ ॥ पंच्यमक्षेवराब्जे ॥ नानारगन्निवेदनं ॥ शारवात्नवणशास्त्राअणुन ॥

७५

असंख्यातरिचविति ॥ १० ॥ दधिदुग्धनवनित ॥ यत्रेपाटवसोडिलेवहुत ॥ जैसावर्षाव ॥ काळिसरि
 ताद्यावत ॥ समुद्राशिमिटावया ॥ ११ ॥ पुजारेलोहोदंडवनि ॥ मोककिकरिलितेकांहाणि ॥ प्रसादवा
 हस्यावाप्रणेनि ॥ प्रेवकरितिवहुत ॥ १२ ॥ नोतेयेदेविकेसलिसमयामित ॥ तिजवरितेप्रहरआदळत ॥
 देविहणसंकटयेथ ॥ मजताअनुतवाडवेले ॥ १३ ॥ असुरिनाणिलारधुनाथ ॥ वैवेथयारिलेहनुमं
 त ॥ मजताडणहेयेथ ॥ कोणारिजनर्थसांथा ॥ १४ ॥ असेहाणिमोककिकरिलितेअसुरा ॥ कि
 काहिचनयेबाहर ॥ हणतिजाजिदेवनेसमया ॥ यारिलेसर्वनिधारे ॥ १५ ॥ वृध्ववृध्वअसुरवा
 लत ॥ केचिदेविमाडलाअनर्थ ॥ ईडिचेतविलाणिलारधुनाथ ॥ बरवाअनर्थहिस्यपुढा ॥ १६ ॥
 रावणेचोरिलिशिलसुहर ॥ अकस्मातबालायकवांबर ॥ तणेठकाजाकुनिसमया ॥ केअसंकु
 स्वहुतांचा ॥ १७ ॥ तैसेचमांडलेयेथ ॥ असेहणनिबुद्धिवंत ॥ निजस्थानाप्रवितेवेळे ॥ जातेजा
 लेतेकाळि ॥ १८ ॥ असेईडोअन्नाचेपर्वत ॥ असुरवातितामागलेवहुत ॥ परिदेविनेकेचित्तसा ॥

॥ श्रीरामा ॥
॥ ७ ॥

पुरेन ह्यणे सर्वथा ॥ ११ ॥ मग शुद्ध्या लिति जक ॥ सेवं चिबिपितितां बोल ॥ तेकां हा कफो हुनि प्रांज
ब ॥ रुद्ररूपिणि बोलत ॥ १० ॥ अरमिजा जितुष्टे लंपुर्ण ॥ तुह्यारिजिदक्षिपदेदं न ॥ तुह्यिजणिं
कापतिरावण ॥ करिनसमाने दोषांशि ॥ ११ ॥ माद्रिप्रसन्नता लवला ह्या ॥ आतां च येई लप्रत्यया
॥ जैसे देविचे शब्द परिसोनियां ॥ साहाणे चा किले श्रुत कडे ॥ १२ ॥ देवि ह्यणे या उपरि ॥ रामस्यै मि
त्राणां रश्मि उकरि ॥ मग केचि घाला हे उक ॥ मितिया ॥ या उपरि कौतुक पा होवें ॥ १३ ॥ सच्चिदानंद ॥ विजय ॥
रघुविरा ॥ ज्या त्या स्वरुपाचान केवें पार ॥ जावेद मास्त्रा शिबगोचर ॥ त्या शिमिसगळे गळिब ॥ ७ ॥
॥ १४ ॥ जैसे देविचे शब्द जैसे न ॥ जानंद लेतं मुदा यज्ञा ॥ विसकोटिस ह्यसधे उना ॥ चालिले रा
माशि जाणावया ॥ १५ ॥ रविकुकिंचिनिधाने ॥ देविलिनागपाशिबा कर्पुनि ॥ ते सोडुनि
ते ह्यपि ॥ रथावरिद्रुढ बांधिले ॥ १६ ॥ मग काढिले माहनास्त्र ॥ सावध जाले रामस्यै मित्रा ॥ उघडि
ले बाकर्ण राजिवेनत्रा ॥ तो मावने जसुरहाटेले ॥ १७ ॥ श्रीरामस्यै मित्रास्य बोल ॥ वारेशत्रुनि जाहा शिबणि
ले ॥

आमुवेधनुस्यवाणहिरोनिनेले ॥ रथिवाधिलेद्रुडवाहा ॥ १५ ॥ व्यनकिसरिखेचिद्रना ॥ गेलेदु
 स्वसागरिवुडान ॥ अरथयागिलबातांप्राणा ॥ हेवर्तमानजेकतां ॥ १६ ॥ कैशिल्यासुमित्रादोधि
 जीणि ॥ प्राणत्यागतिलजेकणि ॥ आणिवशिष्टादिमाहामुनि ॥ दुरवच्यकिंपडतिल ॥ १७ ॥
 विभिषणसुग्रिवहनुमेत ॥ नकनिकअंगदजांबुवंत ॥ माझेप्राणसरवेसमस्त ॥ प्राणसु
 कळेहेतिलकिं ॥ १८ ॥ देवसर्ववंदियजिले ॥ त्यांनिधयदुर्गजजिखंचले ॥ क्षुधितपात्रावरनि
 उर्वविले ॥ तेसजालेदेवशि ॥ १९ ॥ अतांअसावधैर्यधरना ॥ जरिसंकटिपवेलुडमारमणा ॥
 तरिस्वणमात्रेहविघ्ना ॥ निरसुनिजाईलसांमित्रा ॥ २० ॥ साक्षांत्तद्रावतार ॥ तोआमुचाहुनु
 गंतसाचार ॥ तोजरिपावेलसत्वर ॥ तरिअशुरसर्वसंकारिता ॥ २१ ॥ साक्षांत्तरोषनारायण
 ॥ अवतारयुत्तधरामलक्ष्मण ॥ आल्यासमयासरिववलेन ॥ दावितिरवुणसर्वाशि ॥ २२ ॥ असो
 राक्षसिंरामसोमित्र ॥ रथिवाधिलसत्वर ॥ शिंदुरवर्णपुष्पहम ॥ गळंधानलेनयांच्या ॥ २३ ॥ वरिउ

॥ श्रीराम ॥
॥ ८ ॥

(९)

धकितिशेदुरा ॥ पुढें होत वाद्यां चा गजर ॥ न न रास्त्रं कर्त नि समग्र ॥ असुर हा का फेडिति
॥ २७ ॥ चालविले ते कामिरवत ॥ तो नगर लो कस्य मस्त ॥ धा विले पा हा वयार धुनाया ॥ ये क
चढत गोपुरि ॥ २४ ॥ देव तं हो कि मुर्तिस कुमारा ॥ लोकासन धर वे गी ह्वर ॥ ने चिं श्रको
ला ग लं निरा ॥ हा हा कार जा ला ॥ २५ ॥ नरिन र र ड ति समस्त ॥ ये क चि जा ला आ का ला ॥ चरा
चरा जिव समस्त ॥ पा हा नि र धुना य शो क करि वे ॥ २६ ॥ सिन प्र द क्ष या कर ना ॥ दे उ का त ॥ विजय ॥
जा पि ले दो ध ज्ञ पा ॥ दे वि चिं क पा र उ धु ना ॥ वां त ले टु न दि ध ले ॥ २७ ॥ क पा र उ धु नि ॥ ८ ॥
पुढ ति ॥ रा क्ष स गा ध क धा लि ति ॥ हा तिं दे व या धे उ नि ना च ति ॥ म य प्रा श न उ ज्ज त ॥ २८ ॥
इं के डे दे कु कां तरा म ल क्षु म पा ॥ पा हा ति दे व क डे व ले कु ना ॥ ल व ति णो प सरि ले वि शा क्क
दन ॥ का क दे र्वा नि च क च कां का पे ॥ २९ ॥ हा क दि ध लि म यं कर ॥ ह्य णो तु हि दो ध रा ज पु
त्रा ॥ तु हा म गि कि वे आ सा म व रा ॥ स्म र णं कर कु क दे व ते चं ॥ ३० ॥ प्रा ण स र वा अ स ल पा हि ॥

यात्रिचिंतादेहांतसमई॥यावरितो जनकाचा जावई॥ कायबोलता जाहाला॥३५॥ इंद्रिबनविंप
 उगीं अस्ति॥ तरितेमा जें स्मरण करित॥ तो बाजिमिर घुनाया॥ संकटिं स्मरां कोणाशिं॥३६॥ तरि
 माश्या प्राणत्वाहि प्राण॥ जिवलगसरवावयुजंदन॥ तो असता तरिविघ्न॥ रुदांन लागतं अ
 स्याशिं॥३७॥ आतां मारुतिबैसा श्नेहविशेषा॥ मायतुंच करिं आह्वासा॥ किंजनीनिपाठिकाक
 सा॥ प्रितिवहुधुतीना॥३८॥ ऐकसारधुपतिवेंदयना॥ केपिनेत्रिलोटलंजिवन॥ फुंदफुंदोनवायु
 नंदन॥ अरिचरणरामाच॥३९॥ नयनेदकेकसुख॥ साकितेकरामचरण॥ आपुलेरपक्षिताशिक
 हारण॥ मगदाविताजाहाला॥४०॥ द्रिष्टिदूरवाहनमंचा॥ प्रेमं प्ररंदाटकारधुवाथा॥ उठुनियं अ
 कंगिता॥ कायद्रष्टलदेउंजातां॥४१॥ कविनलकंकेलबहुल॥ परिआसुरवाशिनसापडंइहांता॥
 पठिराखावैवारिमक॥ मारुतिबैसा नकेचि॥४२॥ मारुतिसहजणेरधुविर॥ म्याक्रेटिवरिद्येतेले
 अवतार॥ परिलुजानविसरउपकार॥ कळांनिहिहनुमता॥४३॥ उपकारदिनाहि निति॥ काय

॥ श्रीराम ॥
॥ १५ ॥

(10)

लाडुंमालि ॥ असोयविरिउमिकापति ॥ हनुमंलारिभेटला ॥ १४४ ॥ रामधवद्रोणेहनुमंला ॥ कैसे
शत्रुवधावेजातां ॥ यरुद्रोणेलुहिहेचिंता ॥ कांठिनकराविमानशिं ॥ १४५ ॥ लुहिपतिसेवसालपो
ना ॥ मियेकेकृष्णसुरबालाउन ॥ तयाचिंशिरछेदुन ॥ करिनचुर्णयथेचि ॥ १४६ ॥ रामद्रोणमशिंधनु
ष्यवाणा ॥ जरिमज्जदेशिकबायुन ॥ तरिबासुरसर्वसंकरिना ॥ क्षिणमात्रनलगतां ॥ १४७ ॥ बालेप्रा
पेशनंदन ॥ मिस्वहस्तेमारिनमहिसावण ॥ मगकपाटेउचुन ॥ अहिरावणवधातुहि ॥ १४८ ॥ मग
गुसरपेहनुमंतजाउन ॥ दोषाचेबापिले धनुषबाण ॥ पाठिशिलपुनिरामलक्षुमण ॥ देवि
होउनिवैसंला ॥ १४९ ॥ ह्रोणमगधमहिरावण ॥ लुचिअधिमशिखादर्शना ॥ अकृतांअशियावचना ॥
यसप्रवेशदेउकिं ॥ १५० ॥ जेसापंच्याननचंदरिता ॥ वारणप्रवेशलेऊमता ॥ किंवाअत्रियजांनि
ता ॥ मगअकस्मातनिघाला ॥ १५१ ॥ किंभुंजंगाचेविकिदेखा ॥ प्रवेशलाजैसामुशक ॥ किंमरणे
णोनिपतंगसुरब ॥ दिपासभेयंपातला ॥ १५२ ॥ तैसाप्रवेशला ॥ म्हिरावण ॥ भयानकेदेविदेखान ॥

॥ विजय ॥
॥ १५ ॥

धाकेकौंधान्वनमन ॥ करिजाजालेयवां ॥ ५३ ॥ देविचेवरणिमस्तकठेविला ॥ देरवोनिमाहा
 रद्वेलाभला ॥ असुरपायांलकिंमदिला ॥ मस्तककेलाशतचुर्ण ॥ ५४ ॥ हालपायसाडितेक्षणि ॥
 तेषदृषाणिमंगकजननि ॥ तोदृषादृषादकेनि ॥ शाहाणउठेणपलले ॥ ५५ ॥ कायतोपा
 हावयाहंतंत ॥ पुजास्त्रिलिलेउकांत ॥ तववयात्वाहायदिहजात ॥ त्याचेपाठिहकुहकु
 ॥ ५६ ॥ महिरावणावागेलाप्राणा ॥ मखिहिरावणेवोलेवचन ॥ ह्रणच्यारधटिकाजाल्यापु
 र्णा ॥ बंधुजशुनिबाहिरनये ॥ ५७ ॥ देवकिंनानजप्रसादसमुक ॥ तोत्विजवधानेईल ॥ ह्रणा
 गित्याचेपाठिलगिंततावेक ॥ तोहेउकिलजरा ॥ ५८ ॥ पुढिलफकावोडिला ॥ देविसनमावया
 जांगेला ॥ मकुणप्रायरगडिला ॥ पायातळिहनुमंत ॥ ५९ ॥ जेस्येदेरवोनिविपरित ॥ दुजाच
 कचकाकापत ॥ ह्रणहानकेव्हिहनुमंत ॥ लंकानगरजाकिलेजपो ॥ ६० ॥ सवगमुरकुंडि
 वकोना ॥ द्वारालजापटलायउन ॥ दोहिहसेकरना ॥ शंरवकरितिजाकोषि ॥ ६१ ॥ ह्रणजेणलं

श्रीराम ॥
॥१०॥

॥

काजाकिलि ॥ लोकावसलासेदुकि ॥ देविमोरितहारलि ॥ पुजाघतलिसर्वतेणे ॥ ६२ ॥ पु
जास्यासहितमहिरावण ॥ यमपुरिसपावलापूर्ण ॥ जैसेजेकतांपिसीनासेन ॥ पकंलागेल
सर्वहि ॥ ६३ ॥ राक्षसासुतलाबाकान ॥ नामजेकतांचिहनुमंत ॥ यकतेथेचिपावलमत्याये
कजातलसुनिदिशा ॥ ६४ ॥ मगशस्त्रकवयेवाशोन ॥ शेनास्यागरयकवटन ॥ शिष्यजात्र ॥ विजय ॥
अहिरावण ॥ पुण्यालगितेककि ॥ ६५ ॥ स्रणवाहिरयईरेमर्कटा ॥ केठेप्रवेशलाशिमात्र ॥ ११० ॥
धिरा ॥ आजियमपुरिचियावाटा ॥ समातकरलाविजसुजा ॥ ६६ ॥ लोदुकांमजिवायुपु
त्रा ॥ स्कदिघेतलेरामसोमित्र ॥ कितेविस्फुजाणिपुपुरगौरा ॥ यकावहनिवैसले ॥ ६७ ॥ किं
रुषिजाणिदिनपति ॥ वैसलेदिसलियकराय ॥ किईद्रजाणिवचस्पति ॥ यकावहनिआस
दले ॥ ६८ ॥ जैसेदोघेस्कदिघेठन ॥ बाहुरनिघांपाहवायुनंदन ॥ पाह्वपेटकरन ॥ फोडिलि
कपाटंतेककि ॥ ६९ ॥ बाहुरप्रवटतांलाकाका ॥ पुढेउपटुनिअवघेदेउक ॥ आकाशिमिरकाविअवलिके ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com